Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 1, Jan-Feb – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 13/02/2020 Accepted on : 25/02/2020 Publication Date: 28/02/2020

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. ग्रीष्मा शुक्ला **शीला देवी**
प्रोफेसर, शोधकर्त्री,
शिक्षा संकाय, जयपुर नेशनल यूनिवसिर्टी, जयपुर
Email- grishma.edu@gmail.com

सारांश : यदि हम वर्तमान समय में अपने परिवेश पर दृष्टिपात करें तो आज की युवा पीढ़ी में अनुशासनहीनता, कर्त्तव्यनिष्ठा की कमी, जातिवाद, क्षेत्रवाद व सम्प्रदायवाद की संकीर्ण भावनाएँ दृष्टिगोचर होती है। शिक्षक व विद्यार्थी भारतीय संस्कृति, शिष्टता आदि मूल्यों से दूर हटते नजर आ रहे हैं। विज्ञान और तकनीकी के बवंडर ने हमारी आत्मचेतना तथा संवेदनशीलता को इतना ज्यादा बिखेर दिया है कि आधुनिकता के भंवरजाल में फँसकर मानवता की अस्मिता संकटग्रस्त हो चुकी है। प्रस्तुत शोध का मूल उद्देश्य है – केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन करना। प्रस्तुत अध्ययन एक विवरणात्मक अनुसंधान है जिसमें शोध प्रदत्तों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया है। विषयवस्तु विश्लेषण प्रपत्र के आधार पर पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों का तथा शिक्षक अभिमत मापनी का विश्लेषण प्रतिशत के आधार पर किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी की गद्य व पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित 83 मूल्यों में से कक्षा–11 की पाठ्यपुस्तकों में 74 मूल्य (89.16:) निहित है तथा कक्षा–12 की पाठ्यपुस्तकों में 79 मूल्य (95.18:) निहित है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 11 व 12 की हिन्दी की आरोह गद्य–पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित मूल्यों में धर्म एक ऐसा मूल्य है, जो कि दोनों ही कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में नहीं पाया गया। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 11 व 12 की हिन्दी विषय की विषयवस्तु में निहित मूल्यों के समावेश के सम्बन्ध में विषय शिक्षकों का अभिमत अत्यधिक, अधिक व औसत स्तर का रहा। सभी विषय शिक्षकों का अभिमत है कि हिन्दी विषय की विषय–वस्तु में मूल्यों का समावेश है।

संकेत शब्द:: पाठ्यपुस्तक, मूल्य, गद्य–पद्य विधा, मूल्यपरक शिक्षा।

१ प्रस्तावना:

वर्तमान समय में परिवर्तन इतनी तेजी से हो रहे हैं कि आज की तुलना में भविष्य बिल्कुल भिन्न होगा। इस नये युग में स्वयं को समायोजित करने के लिये नई पीढ़ी को नया ज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान आत्मसात् करना होगा। इसके साथ ही नई समस्याओं का सामना करने में भी छात्रों को समर्थ बनना होगा, लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि छात्रों को केवल जानकारी ही प्रदान की जाए, अपितु छात्रों में वैचारिक क्षमता, विश्लेषण करना, किसी घटना को बुद्धिनिष्ठ दृष्टिकोण से देखना, तर्क–सम्मत तथ्य को स्वीकार करने की क्षमता भी पैदा करना है, ताकि छात्रों में दृढ़ विश्वास, जिज्ञासा तथा काम के प्रति समर्पण की भावना पैदा की जा सके। हमारे भारतीय समाज में शिक्षक को संस्कृति का आधार स्तम्भ माना गया है। शिक्षक ही विद्यार्थियों को मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करके उनके नैतिक स्तर को ऊँचा उठा सकता है।

यह तथ्य सर्वमान्य हो चुका है कि शैक्षिक रूप से ही मूल्यों का विकास किया जाना संभव है। अतः शिक्षा की समस्त भूमिकाओं ने इसी कार्य को उत्तम प्रकार से करने के लिए पाठ्यक्रम में मूल्यों को शामिल करने का प्रयास किया है। लेकिन इस बात की भी आवश्यकता अनुभव की गई है कि शिक्षक विद्यालयी वातावरण को इस प्रकार तैयार करें जिससे कि विद्यार्थियों में स्वयं ही मूल्यों का विकास हो सके।

मूल्य एक ऐसी आचरण संहिता या सद्गुणों का समावेश है, जिसे अपनाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास कर समाज में प्रभावशाली बनकर उभरता है। मूल्य एक प्रकार का मानक है। मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया, विचार को अपनाने से पूर्व यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाए या त्याग दे। जब ऐसा विचार व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है, तो वह मूल्य कहलाता है। पण्डित जवाहर लाल नेहरू का यह कथन यहाँ अत्यन्त प्रासंगिक है – अपने सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करें और उन्हें जीवन का आधार बनायें।''

मारिस आंगस्टा नील (1964) ने मूल्यों को तीन भागों में बाँटा है – (1) दार्शनिक मूल्य, (2) मनोवैज्ञानिक मूल्य, (3) सामाजिक मूल्य। आलपोर्ट, बर्नन तथा लिण्डजे (1960) ने अपनी मूल्य मापनी में 6 प्रकार के मूल्यों का समावेश किया है – (1) सैद्धान्तिक मूल्य, (2) आर्थिक मूल्य, (3) सौन्दर्यात्मक मूल्य, (4) राजनैतिक मूल्य, (5) सामाजिक मूल्य, (6) धार्मिक मूल्य।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित एवं बी.आर. गोयल (1979) द्वारा सम्पादित पुस्तिका में सामाजिक व आध्यात्मिक 83 मूल्यों का परिगणन किया है। इन मूल्यों का निर्धारण विविध शैक्षिक आयोगों तथा समितियों के प्रतिवेदनों की सिफारिश के आधार पर किया गया है। ये 83 मूल्य इस प्रकार हैं –

1. दूसरों के सांस्कृतिक मूल्यों की सराहना, 2. अस्पृश्यता विरोध, 3. नागरिकता, 4. दूसरों की चिंता, 5. दूसरों का ध्यान, 6. सहयोग, 7. सामान्य अच्छाई, 8. प्रजातांत्रिक निर्णय–क्षेत्र, 9. व्यक्ति की महत्ता, 10. शारीरिक कार्य का सम्मान, 11. साथी भावना, 12. अच्छा वातावरण, 13. राष्ट्रीय समाकलन, 14. आज्ञा पालन, 15. समय का सदुपयोग, 16. ज्ञान की खोज, 17. संयम, 18. करुणा, 19. सामान्य लक्षण, 20. शिष्टाचार, 21. भक्ति, 22. स्वास्थ्यकर जीवन, 23. अखण्डता, 24. शुचिता, 25. निष्कपटता, 26. आत्मनियंत्रण, 27. साधन सम्पन्नता, 28. नियमितता, 29. दूसरों का सम्मान, 30. वृद्धावस्था का सम्मान, 31. सादा जीवन, 32. सामाजिक न्याय, 33. स्वानुशासन, 34. स्व–सहायता, 35. स्व–सम्मान, 36.आत्म–विश्वास, 37.स्व–समर्थन, 38.स्वाध्याय 39. आत्मनिर्भरता, 40. चिंतन, 41. समाज–सेवा, 42. मानव जाति की एकात्मकता, 43. अच्छे–बुरे में भेद, 44. सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव, 45. स्वच्छता, 46. साहस, 47. जिज्ञासा, 48. धर्म, 49. अनुशासन, 50. सहनशीलता, 51. समानता, 52. मित्रता, 53. वफादारी, 54. स्वतंत्रता, 55. दूरदर्शिता, 56. सज्जनता, 57. कृतज्ञता, 58. ईमानदारी,59. सहायकता, 60. मानवतावाद, 61. न्याय, 62. सत्यता का महत्व, 63. सहिष्णुता, 64. सार्वभौमिक सत्य, 65. सार्वभौमिक प्रेम, 66. राष्ट्रीय सम्पत्ति का ज्ञान, 67. पहल, 68. दयालुता, 69. जीवों के प्रति प्रेम, 70. धर्मपरायणता, 71. नेतृत्व, 72. राष्ट्रीय एकता, 73. राष्ट्रीय संचेतना, 74. अहिंसा, 75. शांति, 76. देश–भक्ति, 77. समाजवाद, 78. सहानुभूति, 79. धर्मनिरपेक्षता, 80. पृच्छा का भाव, 81. दल–भावना, 82. समय की पाबंदी, 83. दल–कार्य।

मूल्यपरक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है जिसमें हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक मूल्य शामिल है। विभिन्न विषयों को मूल्यपरक बनाकर छात्रों के व्यक्तित्व में इन्हें समाहित किया जा सकता है जिससे कि बालक का सन्तुलित व सर्वांगीण विकास हो। देश का अच्छा नागरिक बनाने के लिए बालकों को मूल्यपरक शिक्षा देना अनिवार्य है।

विभिन्न अध्ययनों से यह प्रमाणित हो गया है कि समाज के ढ़ांचे को सुचारू रूप से चलाने के लिए मूल्यों की आवश्यकता है। समाज में फैली हुई अनैतिकता व व्याभिचार के इस दैत्य का सामना मूल्यों के द्वारा ही किया जा सकता है। मूल्यों के माध्यम से सद्भाव, प्रेम, परोपकार, सहयोग आदि में वृद्धि हो सकती है। बालक की सामाजिक, आध्यात्मिक, मानसिक व भावात्मक उन्नति हेतु शिक्षा के साथ मूल्यों की महती आवश्यकता है। विभिन्न शैक्षिक आयोगों, नीतियों एवं परिषद् ने मूल्यपरक शिक्षा देने पर अपने सुझाव दिये हैं –

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49) ने मूल्यपरक शिक्षा के संदर्भ में कहा है – ''सामाजिक दर्शन की रूपरेखा जिसका नियंत्रण हमारी सभी संस्थाओं में होना चाहिए, चाहे वह शैक्षिक, आर्थिक, राजनैतिक हो, इसका संकेत हमारे संविधान की प्रस्तावना में दिया है। इसका तात्पर्य है कि लोकतंत्र में समानता, बन्धुता का उदय होना चाहिए।'' माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने विभिन्न मूल्यों की स्थापना के सम्बन्ध में कहा है कि ''शिक्षा द्वारा स्पष्ट विचार शक्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सहनशक्ति, देशभक्ति आदि मूल्यों के विकास की आवश्यकता है।'' भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66) के अध्यक्ष डॉ. दौलत सिंह कोठारी के शब्दों में ''कल के भावी भारत का निर्माण आज के कक्षा–कक्ष में हो रहा है इसलिए मूल्यों की अत्यधिक आवश्यकता महसूस की गई है।'' शिक्षा नीति (1968) में शिक्षा को राष्ट्रीय महत्त्व का विषय माना गया और स्वीकार किया गया कि शिक्षा के द्वारा ही लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाया जा सकता है। स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, न्याय, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों का विकास भी शिक्षा के द्वारा ही किया जा सकता है। 20 जनवरी, 1986 को इसे 'नेशनल करिकुलम फॉर प्राइमरी एण्ड सैकेण्डरी एजूकेशन : ए फ्रेम वर्क' के नाम से प्रकाशित किया गया। इसमें 10 वर्षीय आधारभूत राष्ट्रीय पाठ्यचर्या को पूरी तरह ईमानदारी से देश में लागू किया जाए तो इससे सामाजिक समानता और राष्ट्रीय एकता का विकास निश्चित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) की कार्ययोजना (1990) में समानता, सामाजिक न्याय, प्रबुद्ध व मानवीय समाज के निर्माण हेतु जरूरी मूल्यों का विकास तथा कार्यक्षमता के विकास हेतु पाठ्यक्रम को जोड़ने पर बल दिया। विद्यालयों में प्रवेश की व्यवस्था में भी लचीलापन लाने का प्रयास किया गया। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप (2005) के अनुसार सर्वव्यापी मूल्य हमारे विधान में भी निहित है। ये मूल्य हैं – बंधुत्व, समानता, स्वतंत्रता, समाजवाद, जनतंत्र एवं धर्मनिरपेक्षता। इन मूल्यों को छात्रों को सिखाने की बात कही है।

भाषा को लेकर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या प्रारूप (2005) में ऐसी नीति अपनाने को कहा कि विद्यार्थी कहानी, कविता, गीत और नाटकों के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़े रहे। इनके माध्यम से वे अपने अनुभव विकसित करके और दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के अवसर प्राप्त करते हैं। नैतिक वैधता के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में ईमानदारी, वस्तुपरकता, सहयोग, भय व पूर्वाग्रह से आजादी जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करने पर बल दिया गया है।

मूल्यों का सम्प्रेषण विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से किया जाना अभिप्रेत है और लगभग सभी विषय मूल्यों के विकास में सहायक रहते हैं। तथापि भाषा का क्षेत्र ऐसा है जिसमें मूल्यों के संचार की संभावना अधिक मात्रा में रहती है। चूँकि हिन्दी हमारी मातृभाषा है और विद्यार्थी के हृदय को स्पर्श करती है, इसलिये हिन्दी भाषा के माध्यम से मूल्यों का सम्प्रेषण अधिक प्रभावी हो सकता है। इसके अन्तर्गत कहानी, संवाद, लेख, कविता, दोहा आदि को पढ़ाते समय कोई भी मूल्य से सम्बन्धित बात आए, तब उसे पढ़ाते समय वहीं उभारने की कोशिश करनी चाहिए। बालकों को अपने विचार प्रस्तुत करने का मौका देना चाहिए, इससे उनमें चिंतन मूल्य का विकास होगा। विद्यालय में विषय शिक्षक समय–समय पर लेखन प्रतिस्पर्धा, क्विज, नीतिपरक कविता, प्रतियोगिता, वाद–विवाद आदि के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करके उनमें मूल्यों का विकास कर सकता है। डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार, ''मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने की माँग में न केवल देशभक्ति का भाव ही निहित है, बल्कि मनोविज्ञान और अच्छी शिक्षा के सिद्धांतों का यही तकाज़ा है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। यही तकाज़ा शिक्षा के आर्थिक पक्ष का भी है''। बालक जितनी कुशलतापूर्वक स्वाभाविक ढंग से मातृभाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकता है उतना और किसी भाषा के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यक्त करने और समझने का सामर्थ्य नहीं रखता इसलिए मातृभाषा ही वह भाषा है, जिसके द्वारा व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास सम्भव है।

मातृभाषा समस्त भाषाओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बालक की प्रथम भाषा होती है, इसलिए हिन्दी–भाषी सभी प्रदेशों में हिन्दी का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। चूंकि हिन्दी–भाषी प्रदेशों में हिन्दी मातृभाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। अतः हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में भाषा तत्वों के साथ ही मूल्यों

के समावेश को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। मूल्यों की शिक्षा के लिए पाठ्यपुस्तकें एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकती है। मातृभाषा में लिखित पुस्तकों की विषय–वस्तु को विद्यार्थी सरलता से ग्रहण करने में समर्थ होते हैं। जिस प्रकार मातृभाषा का व्यक्ति के जीवन में विशेष महत्व होता है उसी प्रकार राष्ट्र के जीवन में राष्ट्रीय भाषा का विशेष महत्व होता है। हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में मूल्यों के समुचित विकास के लिए पाठ्य सामग्री का होना और भी महत्वपूर्ण एवं आवश्यक हो जाता है।

अतः आवश्यकता है कि बालकों को विद्यालय स्तर पर मूल्यों की शिक्षा दी जाए ताकि नवीन पीढ़ी को सही दिशा मिले इसलिए शोधकर्त्री ने इस विषय को शोध का विषय बनाना उपयुक्त समझा।

प्रस्तुत शोध की उपर्युक्त औचित्यपूर्ण सिद्धिकरण विवेचना के बाद शोध की वर्तमान आवश्यकता एवं सार्थकता को स्पष्ट करने की दृष्टि से इस क्षेत्र से सम्बन्धित वर्तमान एवं पूर्व में किये गये कतिपय शोध कार्यों की पड़ताल करना एक आवश्यक सोपान होता है। पूर्णिमा भाटिया (1991) ने विद्या भारतीय तथा अन्य संस्था द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन किया और पाया कि जीवन मूल्यों पर शिक्षा व्यवस्था में भिन्नता का प्रभाव नगण्य पाया गया। रविबाला सोलंकी (1993) ने किशोरों में भारतीय जीवन मूल्यों के अवबोध का विकास भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन में पाया कि मूल्यों के विकास हेतु विभिन्न प्रयोगों का प्रभाव पड़ा।सुहासिनी श्रीवास्तव (2004) ने समान सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति वाले हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों के अध्ययन में पाया कि माध्यम का प्रभाव मूल्यों पर नहीं पड़ता बल्कि सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियाँ व पारिवारिक वातावरण अधिक प्रभावशाली कारक हैं। वी. मुरलीधर शर्मा (2006) ने भारतीय परम्परागत ज्ञान में निहित मूल्यों का आधुनिक शिक्षा तंत्र में अनुप्रयोगों का अध्ययन किया व निष्कर्ष रूप में पाया कि आधुनिक शिक्षा तंत्र के पाठ्यक्रमों में जिस सीमा व आवश्यकता तक मूल्य शिक्षा को स्थान प्राप्त होना चाहिए, उतना नहीं है। मूल्य व दायित्वों के शाश्वत् आयामों की आधुनिक शिक्षा में उपयुक्त स्थान देने की महती आवश्यकता है। आरती पुन्ढीर (2013) ने माध्यमिक स्तरीय संस्कृत पाठ्य–पुस्तकों में निहित मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष रूप से प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तरीय पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों की स्थिति सामान्य है। अध्ययनों की समीक्षा के आधार पर ऐसा नहीं कहा जा सकता कि इस विषय पर अध्ययन नहीं हुए है। हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों पर अध्ययन शोधकर्त्री को दृष्टिगत नहीं हुए हैं। विषय की तात्कालिक आवश्यकता, महत्व एवं गंभीरता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत विषय पर शोध करने का निश्चय किया।

२ समस्या कथन:

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन।

३ शोध प्रश्न:

- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी की गद्य व पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित मूल्य किस सीमा तक निहित है ?
- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी की गद्य व पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित मूल्य किस दृष्टि में भिन्न है ?
- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी विषय की विषयवस्तु में निहित मूल्यों के समावेश के सम्बन्ध में विषय शिक्षक क्या अभिमत रखते हैं ?

४ संक्रियात्मक परिभाषा :

मूल्य :– प्रस्तुत शोध कार्य में मूल्य से तात्पर्य एन.सी.ई.आर.टी. (1979) द्वारा प्रस्तावित 83 मूल्यों से है।

५ शोध कार्य की परिसीमाएँ :

- प्रस्तावित शोध में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के केन्द्रीय विद्यालयों की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी विषय की गद्य–पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों को ही अध्ययन हेतु चुना गया है।
- प्रस्तावित शोध में जयपुर संभाग में स्थित केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के केन्द्रीय विद्यालयों में अध्यापनरत हिन्दी विषय शिक्षकों को ही अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

६ शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन एक विवरणात्मक अनुसंधान है। शोध विषय की आवश्यकतानुसार विषयवस्तु विश्लेषण विधि व सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त करना उपयुक्त रहा।

अध्ययन का समष्टि क्षेत्र :

सम्पूर्ण राजस्थान में उच्च माध्यमिक स्तरीय केन्द्रीय विद्यालयों की संख्या 53 है, जिनको प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।

शोध कार्य में प्रयुक्त न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्ययन में सोद्देश्य न्यादर्शन पद्धति द्वारा हिन्दी विषय की कक्षा–11 व 12 की गद्य व पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकें एवं इन कक्षाओं में हिन्दी विषय को पढ़ाने वाले शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। न्यादर्श में जयपुर संभाग के समस्त जिलों के उच्च माध्यमिक स्तरीय केन्द्रीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है, जिनको तालिका में दर्शाया गया है।

न्यादर्श तालिका - 1

क्र. सं.	जयपुर संभाग में कुल जिलों के नाम	केन्द्रीय विद्यालयों की संख्या (कक्षा–11 व 12 के स्कूल)	हिन्दी शिक्षकों की संख्या (कक्षा–11 व 12)
1.	अलवर	2	2
2.	झुन्झुनू	1	1
3.	दौसा	–	–
4.	सीकर	1	1
5.	जयपुर	7	8
	कुल	**11**	**12**

स्रोत – www.kvsangnathan.nic

शोध उपकरण :

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने कार्य विश्लेषण हेतु स्व–निर्मित उपकरणों का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरणों का विवरण इस प्रकार से है –

(क) विषयवस्तु विश्लेषण प्रपत्र

(ख) शिक्षक अभिमत मापनी

विश्लेषण की योजना :

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया है। विषयवस्तु विश्लेषण प्रपत्र के आधार पर पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों का तथा शिक्षक अभिमत मापनी का विश्लेषण प्रतिशत के आधार पर किया गया है।

७ निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन में शोध प्रश्नों के आधार पर प्राप्त तथ्यों की व्याख्या व विश्लेषण के उपरान्त जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, वे इस प्रकार से हैं –

शोध प्रश्न–1

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी की गद्य–पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित मूल्य किस सीमा तक निहित है ?

प्रस्तुत शोध प्रश्न के अनुसार शोधकर्त्री ने निष्कर्ष रूप में पाया कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी की गद्य व पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित 83 मूल्यों में से कक्षा–11 की पाठ्यपुस्तकों में 74 मूल्य (89.16%) निहित है तथा कक्षा–12 की पाठ्यपुस्तकों में 79 मूल्य (95.18%) निहित है।

इसके आधार पर कहा जा सकता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी की दोनों विधाओं की पाठ्यपुस्तकों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित मूल्य निहित है।

शोध प्रश्न–2

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी की गद्य–पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित मूल्यों से किस दृष्टि में भिन्न है ?

प्रस्तुत शोध प्रश्न के अनुसार निष्कर्ष रूप में शोधकर्त्री ने पाया कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 11 व 12 की हिन्दी की गद्य व पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित 83 मूल्यों में से कक्षा 11 की हिन्दी की गद्य–पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में 74 मूल्य (89.16%) ही निहित है जो मूल्य पाठ्यपुस्तकों में निहित नहीं हो सके, उनकी संख्या 9 हैं।

1. अस्पृश्यता विरोध	2. अहिंसा	3. शुचिता
4. शान्ति	5. धर्म	6. पृच्छा का भाव
7. वफादारी	8. समय की पाबंदी	9. सहायकता

इसी क्रम में कक्षा 12 की हिन्दी की गद्य–पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में 79 मूल्य (95.18%) ही निहित है। कुछ मूल्य ऐसे हैं जो कि हिन्दी की गद्य–पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में निहित नहीं हैं, उनकी संख्या 4 है।

1. अखण्डता	2. धर्म
3. राष्ट्रीय एकता	4. समाजवाद

कक्षा 11 की दोनों विधाओं की पाठ्यपुस्तकों में मूल्यों का विश्लेषण करने पर शोधकर्त्री ने पाया कि कुछ मूल्य ऐसे हैं जो कि दोनों विधाओं (गद्य–पद्य) में आवृत्ति के आधार पर सर्वाधिक प्रयुक्त हुआ वो है – दूरदर्शिता। तत्पश्चात् दूसरों की चिंता, दूसरों का सम्मान, सत्यता का महत्व मूल्य द्वितीय स्थान पर पाए गए। तृतीय स्थान पर प्रजातांत्रिक निर्णय क्षेत्र, व्यक्ति की महत्ता, स्व–समर्थन मूल्य पाए गए।

कक्षा 12 की हिन्दी की गद्य–पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में मूल्यों का विश्लेषण करने पर शोधकर्त्री ने पाया कि प्रजातांत्रिक निर्णय क्षेत्र मूल्य दोनों ही विधाओं की पाठ्यपुस्तकों में सर्वाधिक प्रयुक्त हुआ। तत्पश्चात् दूरदर्शिता व दूसरों का सम्मान मूल्य ऐसे हैं जो वरीयता क्रम में द्वितीय स्थान पर पाए गए। सामाजिक न्याय व स्व–सहायता मूल्य तृतीय स्थान पर पाए गए।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 11 व 12 की हिन्दी की आरोह गद्य–पद्य विधा की पाठ्यपुस्तकों में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित मूल्यों में धर्म एक ऐसा मूल्य है, जो कि दोनों ही कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में नहीं पाया गया। इस मूल्य का दोनों कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में समावेश ना होने का एक कारण ये भी हो सकता है कि भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ सभी धर्मों को समान माना जाता है। देश की एकता, अखण्डता व सम्प्रभुता बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि सभी धर्मों को समान सम्मान दिया जाए।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 11 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में शान्ति व समय की पाबंदी, अहिंसा, वफादारी, सहायकता, पृच्छा का भाव व शुचिता मूल्यों का अभाव पाया गया। इन सभी मूल्यों का पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित होना आवश्यक है, क्योंकि देश की एकता व अखण्डता के लिए बालकों में इन मूल्यों का विकास अनिवार्य है। चूंकि वही भावी पीढ़ी के देश के निर्माता हैं। अतः अगर शान्ति व समय की पाबन्दी आदि मूल्य बालकों को नहीं सिखाऐ जाएँगे तो देश में हिंसा व अराजकता की स्थिति बन सकती है। वहीं दूसरी तरफ समय की पाबंदी मूल्य के माध्यम से बालकों को समय की महत्ता समझाने में सहायता मिल सकती है।

शोध प्रश्न–3

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा–11 व 12 की हिन्दी विषय की विषयवस्तु में निहित मूल्यों के समावेश के सम्बन्ध में विषय शिक्षक क्या अभिमत रखते हैं ?

शोधकर्त्री ने तीसरे शोध प्रश्न में निष्कर्ष रूप में पाया कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 11 व 12 की हिन्दी विषय की विषयवस्तु में निहित मूल्यों के समावेश के सम्बन्ध में विषय शिक्षकों का अभिमत अत्यधिक, अधिक व औसत स्तर का रहा। सभी विषय शिक्षकों का अभिमत है कि हिन्दी विषय की विषय–वस्तु में मूल्यों का समावेश है। कोई भी शिक्षक ऐसा नहीं पाया गया, जिसका यह मानना हो कि हिन्दी विषय की विषयवस्तु में मूल्यों का समावेश नहीं है।

सन्दर्भ सूची:

१ गोकाक, वी. के. (1979). ए वैल्यू ओरियंटेशन टू सिस्टम ऑफ एजुकेशन, न्यू देहली, गुलाब एंड संस पब्लिशर्स.

२ गुप्ता, के. एम. (1982). मोरल डेवलपमेंट ऑफ स्कूल चिल्ड्रन, न्यू दिल्ली, इंडियन एजुकेशन रिव्यू, वॉल्यूम 20, नंबर 2.

३ मंगल, उमा (1995). हिंदी शिक्षण, नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो.

४ प्रज्ञा, मल्ली (2011). शिक्षा के साथ मूल्यों का विकास जरूरी, सम वाहिनी समाचार – पत्र, लाडनूं, जैन विश्व भारती.

५ शर्मा, नैना (2011). वैल्यू एजुकेशन एंड सोशल ट्रांसफॉरमेशन, जयपुर, रावत पब्लिकेशन.

६ शर्मा, रामप्रताप एवं शर्मा मधुलिका (2011). वैल्यू एजुकेशन एंड प्रोफेशनल एथिक्स, नई दिल्ली, रजत प्रकाशन.

७ शर्मा, वी. मुरलीधर (2006). प्राचीन भारतीय परंपरागत ज्ञान में निहित मूल्यों का आधुनिक तंत्र में अनुप्रयोग, विश्वविद्यालय समाचार पत्र, नई दिल्ली, अंक – 44, फरवरी.

८ ताज, हसीन एवं रेखा एस. (1995). नेशनल इंटीग्रेशन थ्रू वैल्यू ओरिएंटेड, इंडियन एजुकेशन एब्स्ट्रेक्ट, न्यू दिल्ली, वॉल्यूम – 2, जनवरी एन. सी. ई. आर. टी.